IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, April 2025
Impact Factor: 7.67

मानवीय संवेदनाओं की कहानियाँ: 'चित्रित नवीन कहानियाँ'

पूनमबा दादूसिंह चावड़ा

पीएच. डी. शोधछात्रा, गुजरात युनिवर्सिटी

संक्षेपीकरण:

डॉ. सूर्यदीन यादव का कहानी संग्रह 'चित्रित नवीन कहानियाँ', जिसमें कुल ग्यारह कहानियाँ हैं। इन कहानियों का हर शब्द मानवीय संवेदना और जीवन के विविध पक्षों को चित्रित करने में सक्षम है। यादव जी के लेखन में जीवन की साधारण घटनाओं और भावनाओं को अत्यंत रोचक ढंग से प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता है।संग्रह की पहली कहानी 'दोस्ती' में बिल्ली की छटपटाहट और उसे बचाने की मानवीय कोशिशों को लेखक ने मार्मिकता से उकेरा है। 'तमाशा' में गरीबों की मजबूरी और समाज की कठोरता को चित्रित किया गया है। 'झगड़ा' कहानी बचपन में हुए झगड़ों और जीवन के संघर्षों से प्रेरणा लेने की सीख देती है। 'शान की खातिर' कहानी में बचपन की आर्थिक परिस्थिति और दो छात्रों के बीच हुए संघर्ष को सजीवता से दर्शाया गया है।'विद्यार्थी और अध्यापक' में गुरू-शिष्य के सुमधुर संबंधों को उजागर किया गया है, जबकि 'हेठी' धार्मिक आडंबर और जातीय भेदभाव का विरोध करती है। 'माँ की लकड़ी' में लेखक का मातृ-प्रेम और माँ के प्रति कृतज्ञता को भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 'कंप्यूटर की लड़की' कहानी आधुनिक समाज में महिलाओं के आर्थिक शोषण की पीड़ा को दिखाती है।'मेरी प्रिय कहानियाँ' में लेखक ने कहानी रचना की प्रक्रिया का वर्णन करते हुए अपने बाल मनोविज्ञान और रचनात्मकता पर प्रकाश डाला

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/568

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, April 2025
Impact Factor: 7.67

है। 'लेरूवा' में एक गाय के बछड़े से लेखक का भावनात्मक जुड़ाव दिखाया गया है, और 'लिलार' में मानवीय संवेदना और बच्ची को बचाने का अनुभव दर्शाया गया है।डॉ. यादव की कहानियाँ आम जीवन के छोटे-छोटे घटनाक्रमों में गहरे अर्थ और सशक्त संदेश छुपाए हुए हैं। उनकी कहानियाँ पाठकों के मन को छूती हैं और समाज की वास्तविकताओं से परिचित कराती हैं। उनकी रचनाओं में जो वैचारिक गहराई और संवेदनशीलता है, वह उन्हें हिन्दी साहित्य जगत का एक अमूल्य सितारा बनाती है।

मुख्य शब्द:व्यामोहवश, सुमधुर, छटपटाहट, तमाशाबीन, सांगोपांग।